Indian Streams Research Journal
ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

'दुर्गादास' उपन्यास में प्रेमचन्द की राष्ट्रप्रेम सम्बन्धी मान्यताएँ

ओम प्रकाश बैरवा

प्रस्तावना

मनुष्य संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा इसलिए विशेष है क्योंकि वह जहाँ भी रहता है उस स्थान, परिवेश, लोगों तथा अन्य परिस्थितियों से घनिष्ठ रूप से जुड़ा रहता है। किसी जन, स्थान और परिवेश से घनिष्ठ जुड़ाव ही मानव को मनुष्य में तब्दील कर देता है। राष्ट्र की संकल्पना भी मनुष्य के किसी स्थान विशेष और वहाँ पर निवास करने वाले लोगों के आपसी संबंधों से जुड़ी हुई है।

'राष्ट्र' शब्द के कई पर्याय है जिनमें -क़ौम, जाति, नस्ल, देश और नेशन मुख्य है अर्थात् 'राष्ट्र' शब्द अंग्रेजी के नेशन से बना है और नेशन (Nation) की उत्पत्ति लेटिन भाषा के 'नेशियों' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है- जन्म या जाति। इस आधार पर कुछ लोग एक निश्चित भौगोलिक सीमा में रहने वाली एक जाति को 'राष्ट्र' के नाम से संबोधित कर देते हैं। परंतु राष्ट्र के बारे में इस प्रकार की धारणा छिपी हुई है और राष्ट्र केवल उसी समूह विशेष

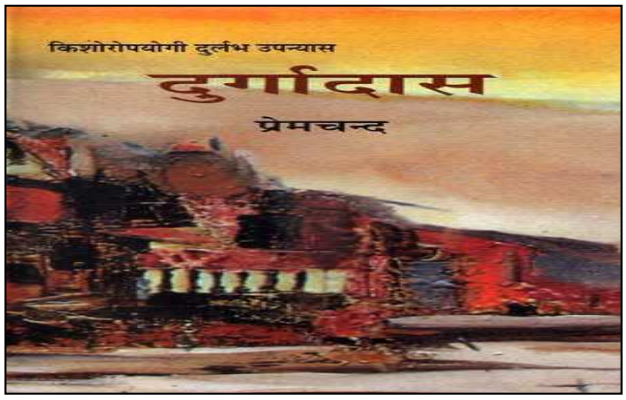

को कहा जा सकता है, जो निश्चित भौगोलिक सीमा में रहते हुए राजनीतिक स्वाधीनता का उपयोग करता हो।

राष्ट की व्याख्या करते हुए जॉन स्टुअर्ट मिल (John Stuart mill) ने भी लिखा है,"राष्ट्र मनुष्य जाति का एक ऐसा भाग है, जो एक दूसरे के प्रति सहानुभूति से बंधा हुआ एक सरकार के अधीन रहने की प्रबल इच्छा रखता हो।"[1] इसी लिए राष्ट्र उस भावना विशेष का नाम है, जिसके कारण कोई व्यक्ति या समुदाय पारस्परिक एकता की भावना का अनुभव करता है। वह श्रद्धा और निष्ठा पर आधारित एक ऐसा आदर्श है, जिसका केंद्र राष्ट्र होता है। वह एक ऐसी मनोदशा है जिसमें व्यक्ति अपनी राष्ट्रीयता एवं राज्य के प्रति उच्चतर भक्ति -भावना का अनुभव करता है इसीकारण राष्ट्र प्रेम का एक प्याय देशभक्ति भी है।

डॉ. नामवर सिंह प्रेमचन्द के लेखन कार्य के सम्बन्ध में लिखते हैं कि " प्रेमचन्द ने सन् 1930 के आसपास ऐलानिया तौर पर कहा था कि वे जो कुछ लिख रहे है वह स्वराज के लिए उपनिवेशवादी शासन से भारत को मुक्त कराने के लिए लिख रहे हैं।"[2]

1. भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद सत्या .सं : ,एम राम पृ .15
2. प्रेमचन्द और भारतीय उपन्यासनामवर : .पृ ,सिंह15

उपर्युक्त कथन के आधार पर यदि विचार किया जाए तो प्रेमचन्द का सम्पूर्ण साहित्य प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से स्वराज की प्राप्ति और उपनिवेशवाद से मुक्ति का ही प्रयास दिखाई पड़ता है।

में सचित्र प्रकाशित 1915 प्रेमचन्द का एक 'दुर्गादास' ऐतिहासिक उपन्यास है। डॉभवदेव पाण्डेय के . अपने इस "- अनुसार उपन्यास द्वारा प्रेमचन्द -तद्युगीन बालक बालिकाओं के मन में स्वामिभक्ति और देशप्रेम का भाव जगाना चाहते थे और वे इसमें प्याप्त सफल ३"भी हुए।

इस सन्दर्भ में स्वंय प्रेमचन्द ने उपन्यास की भूमिका में लिखा है "- इससे उनका चरित्र ही उनमें ,बलवान नहीं होता राष्ट्र प्रेम और साहस का ४"संचार भी होता है। और दुर्गादास जैसे चरित्र के चयन के विषय में वे आगे लिखते हैंवीर दुर्गादास "- अपने अनुपम आत्म त्याग -स्वार्थ सेवा :अपनी नि भक्ति और अपने उज्ज्वल चरित्र के लिएकोहनूर

समान हैं। औरों में शौर्य के साथ कही- कहीं हिंसा और द्वेष का भाव भी पाया जाएगा,कीर्ति का मोह भी होगा, अभिमान भी होगा; पर दुर्गादास शूर होकर भी साधू पुरूष थे।

इस प्रकार प्रेमचन्द राष्ट्र प्रेम और देश भक्ति के लिए तद्युगीन नवयुवक - युवाओं में, आत्म त्यग, उज्ज्वल चरित्र एवं नि: स्वार्थ सेवा भक्ति के साथ-साथ हिंसा और द्वेष विहीन, कीर्ति और अभिमान इत्यादि के मोह से विलग हो, की अपेक्षा रखते थे।

'दुर्गादास' में प्रेमचन्द ने राजपूतों और मुगलों के मध्य होने वाले युद्धों के माध्यम से राष्ट्रप्रेम की भावना को जागृत करने का प्रयास किया है जिसके लिए उन्होंने राजपूतों के अतीत की गौरव गाथा के साथ- साथ राजपूत वीरांगनाओं के कथन उपकथनों का भर्पूर प्रयोग किया है। साथ ही राजपूतों की कहीं-कहीं विवेकहीनता और मुगलों के विश्वासघात के परिणाम का जिक्र करके सचेत रहने की प्रेरणा ही है। इतना ही नहीं प्रेमचन्द मुगलों की हिन्दू-हिन्दू में लड़ाई कराकर लाभ प्राप्त करने की कूट्नीति का भी संकेत करते है और दुर्गादास जैसे महान सेनापति और योद्धा के रूप में सर्वगुण सम्पन्न पाते है।

जोधपुर के सम्राट जस्वंतसिंह संकट के समय की स्थिति का वर्णन करते हुए प्रेमचन्द लिखते है6 कि एक समय था जब भारत के लोग दूसरों की विपत्ति के समय सहायता करते थे और आज वे स्वंय औरों की सहायता के लिए आस लगाए हुए है-" जो मारवाड आज तक औरों की विपत्ति में सहायता करता था, आज वही अपनी सहयता के लिए दूसरों का मुँह ताक रहा है। आदमी नहीं समय ही बलवान होता है। कभी औरंगजेब मुझसे डरता था। आज मैं उससे डरता हूँ। अब इस बुढ़ापे में मैं अपने देश के लिए क्या कर सकता हूँ? कुछ नहीं![6]

---

3. दुर्गादास :प्रेमचन्द .पृ ,5
4. दुर्गादास .पृ ,प्रेमचन्द :9
5. दुर्गादास .पृ ,प्रेमचन्द :9
6. दुर्गादास .पृ ,प्रेमचन्द :15

'दुर्गादास' रूप में प्रेमचन्द के पास एक ऐसा पासा है जो किसी भी समस्या का समाधान ढूढने में सक्षम है इसीलिए औरंगजेब द्वारा जसवंत सिंह के उत्तराधिकारी अजीतसिंह की हत्या करवा देने की आशंका को लेकर दुर्गादास कहता है-"भाइयो! राजपूत दूसरो की रक्षा के लिए अपने प्राणों का लालच नहीं करते। हम राजपूत कहलाकर राजकुमार के समान पाले हुए बालक को अपने हातों मौत के मुँह में डालना नहीं चाहते।"[7]

प्रेमचन्द के लिए राष्ट्र प्रेम अथवा देशभक्ति के लिए स्त्री पुरुष में कोई भेद नहीं है। देश के लिए वे दोनों के ही प्राणों को महत्वपूर्ण मानते हैं और इसी वजह से उन्होंने स्थान - स्थान पर स्त्रियों की भूमिका को भी नज़र अन्दाज नहीं किया है। महारानी का यह कथन कि-"हमारी चिंता मत करुं हमारी लाज रखने वाली यह कटारी है। मैं कब की मर चुकी होती, यदि यह देखने की लालसा न होती, कि राजपूत अपने देश पर किस वीरता से अपने प्राणों को न्योंछावर करते हैं।"[8]

इस संदर्भ में स्वंय दुर्गादास की माँ भी एक महत्वपूर्ण चरित्र है, जो मुगलों के अत्याचार से अत्यंत दुखी है तथा अपने बेटों को देश के लिए मर-मिटने के लिए हमेशा प्रेरित करती रहने वाली एक सच्ची भारतीय नारी है जो स्वंय से अधिक मान भारतमाता को देती है।

भारत की पराधीनता कारण जैसाकि अंग्रेजों के अंग्रेजों के अलावा भारत के लोग जिम्मेदार थे इसी बात की पुष्टि के लिए प्रेमचन्द दुर्गादास की माता के माध्यम से व्यक्त करते हुए लिखते हैं-" पर जब अपने ही बन्धु देश को बरबाद करने पर तुले बैठे हों, तो कोई क्या करे? और इसको स्पष्ट करते हुए प्रेमचन्द लिखते हैं- जसवंत सिंह के बड़े

भाई का लड़का इन्दू सिंह राज्य के लालच में औरंगजेब से मिल गया था। वह चाहता था कि देश के प्रभावशाली राजपूत सरदारों को राह में बिछे हुए कांटों के समान नष्ट कर दे और बेजंट के मारवाड़ पर राज करें।"[9]

प्रेमचन्द राष्ट्रप्रेम के नाम पर की जाने वाली निरी भावुकता के पक्ष में नहीं है। उनका मानना है कि संकट में पड़े देशवासियों की रक्षा भावुक तथा होश खोकर नहीं बल्कि बुद्धि व विवेक के साथ पूरी चतुराई के साथ की जा सकती है और दुर्गादास की अपनी माँ के हत्यारे के विरूद्ध की जाने वाली सौगन्ध के बरक्स एक अन्य पात्र नाथू के माध्यम से प्रेमचन्द अपने विचार व्यक्त करते है- " जिस पापी ने हमारी निर्दोष वृद्धा माता को मारा है, उसे इसी तलवार से मार कर जब तक रक्त का बदला न ले लूँगा, जलपान नहीं करूंगा। नाथू ने काँपते स्वर से कहा- यह क्या करते हैं। मुगल बहुत है और आप अकेले; यदि आज ही बदला न मिल सका तो कब तक आप बिना जलपान के रहेंगे?"[10]

---

7. दुर्गादास .पृ ,प्रेमचन्द :18
8. दुर्गादास .पृ ,प्रेमचन्द :18
9. दुर्गादास .पृ ,प्रेमचन्द :20
10. दुर्गादास .पृ ,प्रेमचन्द :29

इतना ही नहीं प्रेमचन्द की दृष्टि में राष्ट्र अथवा देश के लिए अपने प्राणों के न्यौछावर होने से जो चुराने वाली स्त्री की भर्तस्ना करते हुए प्रेमचन्द उसे धिक्कारते हैं और उसे क्षत्राणी के दर्जे से भी पदच्युत कर देते हैं-" हा ! समय निकल जाने पर तू ऐसे वीर पुरूष को मूर्ख कहती है। धिक्कार है तुझे और तेरे जन्म-दाता को। ब्रह्मा को तुम्हें क्षत्राणी न बनाना था।"11

प्रेमचन्द के विचार में किसी भी देश की पराधीनता सबसे बड़ा अभिशाप है। उनका मानना है कि मनुष्य का जीना तब ही श्रेयस्कर हैं जब स्वतंत्र होकर रहे अन्यथा उसे जीने का कोई अधिकार नहीं है।

साहस और परिश्रम के साथ-साथ चतुराई भी किसी समस्या के विरूद्ध लड़ने के लिए आवश्यक है जिसका प्रदर्शन 'दुर्गादास' में प्रेमचन्द ने जगह- जगह पात्रों के माध्यम से दिखलाने का प्रयास किया है। साथ ही प्रेमचन्द ने संवेदंशील वर्गों मेंशामिल स्त्री की जिम्मेदारी पुरूष पर न छोड़कर स्वंय स्त्री को भी देश भक्ति से प्रेरित करते हुए राष्ट्र के लिए प्राण न्यौछावर कर देने का उदाहरण प्रस्तुत किया है- लालबा ने कहा - "नहीं ! अब मैं कहीं भी अकेली रहना नहीं चाहती। यदि आप मेरी रक्षा करना चाहते हो -तो अपने ही साथ रहने दो मैं भी अब सिपाहियों के वेष में ही रहूंगी और यथाशक्ति आपकी सहायता करूँगी। मुझे इससे इससे अच्छा अपनी रक्षा का उपाय अब नहीं सूझता।"[12]

प्रेमचन्द की दृष्टि में स्वदेशाभिमान किसी जाति, समाज और देश के लिए प्रमुख मूल्य है। दुर्गादास हमेशा अपने देश और जाति के कल्याण के लिए तत्पर रहता था। किसी भे कष्ट साध्य काम के लिए वह कभी भी हिचकता नहीं था और अपने अपार साहस और राष्ट्र प्रेम के फलस्वरूप अमर कीर्ति प्राप्त की। प्रेमचन्द का राष्ट्र प्रेम संकीर्णता में बंधा हुआ नहीं है अपने देश वासियों की रक्षा के साथ-साथ दुर्गादास के माध्यम से प्रेमचन्द मुगल्बन्दियों की सेवा-सुशुषा तथा के साथ मित्रवत व्यवहार का उदाहरण प्रस्तुत कर राष्ट्रप्रेम की परिधि को व्यापक क्षेत्र प्रदान कर देते हैं। दुर्गादास जैसे महान चरित्र के व्यवहार से प्रेरित होकर ही मुहम्मद खाँ और तैवरखाँ जैसे मुसलमान सरदार भी अपनी प्रतिज्ञा के प्रति ईमानदारीपूर्वक अपने प्राण न्यौछावर कर देतें हैं।

शरणागत की रक्षा और किसी भी कीमत पर देश के विरूद्ध कार्य न करने को भी प्रेमचन्द बड़ा मूल्य मानते हैं। किसी जाति धर्म, नस्ल आदि के आधार पर भेदभाव न हो तथा सबके साथ समान व्यवहार हो।

प्रेमचन्द द्वारा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेकर लिखे गए उपन्यास'दुर्गादास' के सम्बन्ध में डॉ. नामवर सिंह लिखते हैं- अतीत की वीरता, शौर्य की, बलिदान की, प्राक्रम की, राजपूतों के बलिदान की कहानियाँ लिखकर वे किसी जातिवाद का प्रचार नहीं कर रहे थे,

---

11. दुर्गादास .पृ ,प्रेमचन्द :33
12. दुर्गादास .पृ ,प्रेमचन्द :44

उनके बलिदान की कहानियाँ लिखकर वे किसी जातिवाद का प्रचार नहीं कर रहे थे, उनके बलिदान की कहानियाँ कहकर वे किसी राष्ट्रवाद या अन्धराष्ट्रवाद का समर्थन नहीं कर रहे थे, बल्कि उस दौर में जनता के भीतर के त्याग-बलिदान की कहानियाँ कह रहे थे। प्रेमचन्द ने देशप्रेम की भावना से अपना साहित्य जीवन प्रारंभ किया"[13]

इसके अतिरिक्त 'प्रेमचन्द' शीर्षक पुस्तक में- प्रकाश्चन्द्र गुप्त भी कहते हैं कि-"प्रेमचन्द का साहित्य देशभक्ति की भावना में डूबा हुआ है।" [3]

13.प्रेमचन्द और भारतीय उपन्यास: नामवर सिंह, पृ.117
03.प्रेमचन्द: प्रकाशचन्द्र गुप्त, पृ. 08

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आधार ग्रंथ -
दुर्गादासप्रेमचन्द -
प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ -
दूसरा संस्करण -2012
2. सहायक ग्रंथ -
- प्रेमचन्द और भारतीय उपन्यास नामवर सिंह :
प्रकाशक .लि .राजकमल प्रकाशन प्रा -
- 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग
नई दिल्ली-02
- संस्करण 2010
- प्रेमचन्द प्रकाशचन्द्र गुप्त :(भारतीय साहित्य के निर्माता)
प्रकाशक- साहित्य अकादमी प्रथम संस्करण -1969
- भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद राम .सं सत्या एम:
हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय
संस्करण -2011

ओम प्रकाश बैरवा